By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-4

Topic – Features & Sources of Indian Political Thought

Class – B.A. Degree-I (Hons., P-II)

Subject - Political Science

Date – 4 Dec.,2020

By Rahul Kumar Jha.

भारतीय राजनीतिक चिंतन के स्रोत एवं विशेषताएँ :-

अध्ययन के स्रोत (2) :-

स्मृतियां – स्मृतियां भी मुख्यतः धार्मिक ग्रंथ हैं। इनमें 'मनुस्मृति' का अन्यतम स्थान है। मनुस्मृति की तरह अन्य प्रसिद्ध स्मृतियों - जैसे कि विष्णु स्मृति, नारद स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, बृहस्पति स्मृति इत्यादि में भी 'दंड-नीति' 'राजविद्या' और 'राजधर्म' के सिद्धांत पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है।

बौद्ध और जैन साहित्य :- बौद्ध साहित्य के अंतर्गत महात्मा बुद्ध के उपदेशों

को तीन प्रसिद्ध ग्रंथों - 'सुत्तपिटक,' 'धम्मपिटक' और 'विनयपिटक' के रूप में संकलित किया गया है जिन्हें सामूहिक रूप से 'त्रिपिटक' कहा जाता है। इनके अलावा 'दीघनिकाय' और जातक कथाओं में भी सामाजिक जीवन का रोचक चित्रण मिलता है। इन सब ग्रंथों में जगह-जगह राजनीतिक विचारों की अभिव्यक्ति हुई है।

इसके जैन साहित्य के अंतर्गत विशेषत: आचार्य हेमचंद्र के 'परिशिष्ट-पर्व' तथा 'भरतबाहुचरित' के अंतर्गत मौर्य काल और उससे कुछ पहले के समय से जुड़ी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री का समावेश हुआ है। इन ग्रंथों में भी राजा के कर्तव्य तथा राज्य-व्यवस्था से जुड़े अनेक तत्वों ने उत्तर रोचक ढंग से प्रस्तुत किए गए हैं।

अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र :-

कौटिल्य का अर्थशास्त्र, कामंदक का नीतिशास्त्र और शुक्रनीति पहले ऐसे प्राचीन ग्रंथ हैं जिनमें मुख्यतः राजनीति से जुड़ी समस्याओं का विस्तृत विवेचन किया गया है। इनसे पहले जितने भी ग्रंथ लिखे गए, उनमें केवल प्रसंग प्रसंगवश राजनीतिक विचारों की अभिव्यक्ति हुई थी। राज्यशास्त्र से जुड़े ग्रंथों में कौटिल्य के अर्थशास्त्र का अन्यतम स्थान है। नीतिशास्त्र से जुड़े ग्रंथ मुख्यतः कौटिल्य के अर्थशास्त्र के आधार पर ही लिखे गए हैं।

इन सब ग्रंथों के अलावा प्राचीन भारत की अनेक साहित्यिक कृतियों में भी अनेक महत्वपूर्ण राजनीतिक विचार यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं। इनमें कल्हण की "राजतरंगिणी' बाण का "हर्षचरित', विशाखदत्त का 'मुद्रा राक्षस', कालिदास का 'मालविकाग्निमित्र' और सोमदेव का "कथासरित्सागर' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

CHAPTER CONTINUES....